बारा तहसील (जनपद–इलाहाबाद) में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 राघवेन्द्र पाण्डेय

परिचय

मानव अपने जीविकोपार्जन के लिए जो उत्पाद आर्थिक किया करता है, वह उसका व्यवसाय कहलाता हैं। किसी भी क्षेत्र में विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न जनसंख्या के संरचना को व्यावसायिक जनसंख्या संरचना कहा जाता हैं। प्राथमिक अवस्था में लकड़ी काटने, चीरने, मछली, पकड़ने या पशु– पक्षियों के आखेट या शिकार, कन्दमूल फल एकत्रित करने और विभिन्न प्रकार के फसलों को उगाने अथवा गृह कार्य, कल कारखानों स्थापित करने या सेवा कार्य, व्यापार आदि, सभी कार्य लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं भरण पोषण के लिए करते हैं। ये सभी कार्य आर्थिक क्रिया कहलाता हैं इसको करने वाले को जनसंख्या के इस संराचना से उस क्षेत्र अर्थव्यवस्था का ज्ञान होता है कि कोई देश किस श्रेणी में है जैसे कृषि प्रधान, पशु–पालन अथवा उधोग प्रधान हैं। जनसंख्या अध्ययन में व्यावसायिक संरचना का बहुत अधिक महत्व होता हैं जिससे उनके जीवन स्तर का भी पता चलता हैं। व्यावसायिक संरचना व्यक्ति की व्यावसायिक स्थिति, के साथ–साथ उसके विचार, सामाजिक दृष्टिकोण एवं राजनैतिक सम्बद्धता को भी प्रकट करती है। इस प्रकार व्यावसायिक जनसंख्या को अन्तर्गत कुल जनंसख्या में कार्यशील जनसंख्या को अलग–अलग कार्यों या व्यवसाय में संलग्नता का अध्ययन किया जाता है, क्योंकि किसी क्षेत्र या देश के आर्थिक आधुनिकीकरण की दिशा में प्रगति की तीव्रता की जानकारी हेतु विभिन्न व्यवसायों में लगी जनंसख्या का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता हैं। व्यावसायिक संरचना ही देश या क्षेत्र के विकास की सीमा निर्धारक तत्व है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना द्वारा जनसंख्या के दबाव का आकलन भी किया जाता हैं जिससे क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास की सम्भावनाओं का विकास का आकलन सम्भव हो सकेगा। कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत 15–59 आयु वर्ग में स्त्री और पुरूष को सम्मिलित किया जाता है। जो कृषि, वानिकी, मत्स्यन, विनिर्माण, निर्माण व्यावसायिक परिवहन, सेवाओं, संचार तथा अन्य अवर्गीकृत सेवाओं जैसे व्यवसायों में भाग लेते हैं। इन क्रिया को चार वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है। जो निम्नवत् है।

कृषि, वानिकी, संचार और मत्सस्यन तथा खनन को प्राथमिक क्रियाओं, विनिर्माण को द्वितीयक क्रिया, परिवहन, सेवाओं को तृतीयक क्रियाओं तथा अनुसंधान और वैचारिक विकास से जुड़े कार्यों को चतुर्थक क्रियाओं के सम्मानित किया जाता है। इन चार वर्गों में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात किसी राष्ट्र या क्षेत्र के आर्थिक विकास के स्तरों का एक अच्छा सूचक है। इसका कारण यह है कि केवल उद्योगों और अवसंरचना से युक्त एक विकसित अर्थव्यवस्था ही द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थक सैक्टरों में अधिक कर्मियों को समायोजित कर सकती है। यदि अर्थव्यवस्था अभी भी प्रारम्भिक अवस्था में है, तब प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न लोगों का अनुपात अधिक होगा क्योंकि इसमें अधिक में मात्रा प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन होता है।

अध्ययन क्षेत्र—पूर्वी उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद के तहसील बारा का चयन इस अध्ययन के लिए किया गया है। अध्ययन क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 25^0 02′03′′ उत्तर से 25^0 21′30′′ उत्तर है तथा देशान्तरीय विस्तार 81^0 32′15′′ पूर्व में 87^0 32′15′′ पूर्व हैं। जिसका क्षेत्रफल 738.660 वर्ग कि0 मीटर है। यहाँ की सम्पूर्ण जनसंख्या 336521 (जनगणना 2011) है। जिसमें पुरूष—स्त्री अनुपात 1000/899 है। इस क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 410 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि0 मीटर हैं। औसत वर्षा 1075.9 मिलीमीटर हैं। बारा तहसील के अन्तर्गत 19 न्याय पंचायत 120 ग्रामपंचायत तथा 294 ग्राम आते हैं।

यहाँ की जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय खनन तथा कृषि है। अध्ययन क्षेत्र का रेलमार्ग एवं राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा होना यहाँ के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है। यहाँ पर कृषि के लिए अनुकूल मिट्टी है तथा रबी खरीफ एवं गन्ना की फसलें प्रचुर मात्रा उगायी जाती हैं। यहाँ सिंचाई का प्रमुख साधन नलकूप है तथा नहरों का विकास कम हुआ हैं।

अध्ययन का उद्देश्य— प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्र में जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करना तथा उसके प्रमुख विशेषताओं को उजागर करता हैं। जिससे अध्ययन क्षेत्र के संसाधन सम्बन्धीं तथ्यों का पता लगाया जा सके। अध्ययन के लिए सन 1961 एवं 2011 के ऑकड़ों के आधार पर तहसील में हुए जनसंख्या व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन को दिखाया गया हैं।

अध्ययन का विधि – प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधितंत्र का प्रयोग करते हुए द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त आकड़े जो प्राथमिक जनगणना सार 1961 एवं 2011 के लिए गये हैं। न्यायापंचायत को अध्ययन की इकाई के रूप में चुना गया हैं। न्याय पंचायत ग्रामस्तर पर विवाद समाधान की एक प्रणाली हैं इसका काम व्यापक सिद्धान्त पर आधारित रहते बहुत सरल बनाया जा सकता है।

ग्रामीण व्यवसायिक संरचना का विश्लेषण :– आर्थिक रूप से जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व हैं क्योंकि इसमें जीविकोपार्जन के स्तर का पता चलता हैं। जनंसख्या के व्यावसायिक संरचना अर्थात सम्पूर्ण क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या के विभिन्न कार्यों के अन्तर्गत विश्लेषण होता हैं। जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के विभिन्न पहलु से घनिष्ठ कार्यात्मक सम्बन्ध होता हैं। इससे क्षेत्र में रहने वाले निवासियों के रहन–सहन और जीवन स्तर का विश्लेषण किया जा सकता हैं। मनुष्य यदि अपने जीवन से सम्बन्धित हो भी कार्य करता है वह उसका व्यवसाय कहलाता हैं।

जनसंख्या का वह भाग जो आर्थिक क्रियाओं एवं सेवाओं के उत्पादन में भागीदार संलग्न हो, कार्यशील जनसंख्या कहलाती हैं। इसे श्रमशक्ति जनसंख्या भी कहते हैं जिसमें सामान्यतः 15 से 59 तक आयु वर्ग के लोग शामिल होते हैं। इसके विपरीत कार्यशील आयु से कम आयु के बच्चे, सेवामुक्त व्यक्ति, गृहणियाँ, विद्यार्थी आदि जो अपने जीवनयापन के लिए किसी आर्थिक क्रियाओं में सलग्न नही है तथा जनसंख्या का वह भाग जो आर्थिक दृष्टि से अकार्यशील हो निर्भर जनसंख्या कहलाती हैं। इसमें 0 से 14 आयुवर्ग के बच्चे एवं 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोग समाहित होते हैं।

सारणी 1 के अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि 1961 को तुलनाओं 2011 में कार्यशील जनसंख्या में गिरावट आया है।

सारणी 1 : न्यायपंचायतो की कार्यशील जनसंख्या तुलना

कार्यशील जनसंख्या (प्रतिशत में)	न्याय पंचायत 1961	न्याय पंचायत की संख्या 19 2011
<38	5	9
38–45	6	7
> 45	8	3

(स्त्रोतः प्राथमिक जनगणना सार, 1961, 2011) 1961 में 38 प्रतिशत से कम 5 न्यायपंचायत 38–45 के बीच 6 तथा 45 प्रतिशत से अधिक 8 न्याय पंचायत है। वही दूसरी तरफ 2011 में 38 प्रतिशत से कम 9,38–45 के बीच में 7 तथा 45 प्रतिशत से अधिक 3 न्याय पंचायत है।

सारणी 2 एवं सारणी 3 की तुलना करने पर जहॉ 1961 में कार्यशील जनसंख्या, सम्पूर्ण जनसंख्या का 46.2 प्रतिशत थी। जबकि 2011 में कार्यशील जनसंख्या, 63.49 प्रतिशत थी तथा ये सारणीय 12 न्याय पंचायतों के आंकड़ों पर है। कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत कृषक जनसंख्या, कृषक मजदूर, पारिवारिक उद्योग एवं अन्य कार्य में लगी जनसंख्या।

सारणी 2 : विकास खण्ड बारा तहसील बनकटी का व्यावसायिक सरंचनाः 1961 (प्रतिशत) में

क्र. स.	न्याय पंचायत	कुल जनसंख्या	कार्यशील जनसंख्या	कार्यशील	जनसंख्या			अकार्यशील जनसंख्या
				कृषक	कृषक मजदूर	पारिवारिक उद्योग	अन्य	
1.	लोहगरा	4239	45.27	57.85	16.22	21.11	4.83	54.73
2.	चकधुरपुर	4523	46.48	73.87	20.18	4.63	1.32	53.52
3.	नारी बारी	3710	45.48	89.67	6.95	1.93	1.45	54.52
4.	नीमी	3978	49.30	80.67	12.81	5.47	0.83	50.70
5.	चीलगुहनिया	3620	42.66	69.03	25.47	3.40	2.09	57.34
6.	गोईसरा	3217	51.23	67.78	25.83	3.97	2.42	48.77
7.	बुधवनपुर	3541	47.13	72.53	21.91	4.05	1.50	52.87
8.	शिवराजपुर	2514	43.13	82.43	11.96	4.32	1.29	56.24
9.	मानपुर	2203	36.93	70.33	24.67	3.49	1.51	63.07
10.	लोहगरा	2139	47.31	68.17	23.46	6.67	1.60	52.69
11.	तातरगंज	1929	41.45	84.99	13.46	0.60	0.55	58.55
12.	पदवा प्रतापपुर	3412	51.57	87.64	8.92	2.03	1.41	48.55

(स्त्रोत प्राथमिक जनगणना सार 1961)

सारणी 3 : विकास खण्ड बारा तहसील बनकटी का व्यावसायिक सरंचनाः 2011 (प्रतिशत में)

क्र. स.	न्याय पंचायत	कुल जनसंख्या	कार्यशील जनसंख्या	कार्यशील	जनसंख्या			अकार्यशील जनसंख्या
				कृषक	कृषक मजदूर	पारिवारिक उद्योग	अन्य	
1.	लोहगरा	5532	37.62	36.91	28.09	7.98	27.02	62.38
2.	चकधुरपुर	6129	38.52	49.22	37.43	2.60	1074	61.48
3.	नारी बारी	4676	36.00	41.08	45.07	3.87	9.98	64.00
4.	नीमी	5106	31.14	44.08	31.13	4.61	19.98	68.86
5.	चीलगुहनिया	4627	37.14	45.38	39.63	3.10	11.42	62.86
6.	गोईसरा	4268	31.70	45.85	42.08	7.78	6.42	68.30
7.	बुधवनपुर	4412	40.28	43.28	26.08	7.38	6.85	59.72
8.	शिवराजपुर	3665	34.44	56.16	31.15	7.34	10.18	65.56
9.	मानपुर	3210	37.44	54.14	30.30	4.60	9.36	62.55
10.	लोहगरा	3178	38.45	48.24	35.59	3.63	11.93	61.15
11.	तातरगंज	2763	42.56	58.24	29.64	7.16	9.01	57.44
12.	पदवा प्रतापपुर	4513	33.61	49.08	35.97	4.84	6.52	66.39

(स्त्रोत प्राथमिक जनगणना सार 2011)

कृषक :

इस श्रेणी के अन्तर्गत वे लोग आते हैं जो अपनी स्वयं की भूमि या किराये अथवा बटायी द्वारा प्राप्त भूमि पर या तो स्वयं करते हैं या अपने देखरेख में उस भूमि पर कृषि करवाते हैं। इसमें लघु एवं सीमान्त कृषकों की अधिकता हैं। सारणी 2 एवं सारणी 3 की तुलना करने पर जहां 1961 में औसत कृषक जनसंख्या 74.79 प्रतिशत था इसमें भी न्यायपंचायत नारी–बारी में सबसे अधिक 89.67 प्रतिशत एवं पदवा प्रतापपुर 87.64, तातरगंज में 84.99, शिवराजपुर में 82.43, नीमी में 80.89 प्रतिशत, औसत कृषक जनसंख्या से अधिक हैं। जबकि सबसे कम न्यायपंचायत लोहगरा में 57.85 प्रतिशत एवं गोईसारा में 67.78 प्रतिशत, बाघापार में 68.17 प्रतिशत, चीलागुहनिया में 69.03 प्रतिशत, मानपुर में 70.33 प्रतिशत, बुधवनपुर में 72.53 प्रतिशत, चकघुरपुर में 73.87 प्रतिशत था जबकि 2011 में औसत कृषक जनसंख्या 47.66 प्रतिशत हैं। इसमें भी न्यायपंचायत तातरगंज में सबसे अधिक 58.99 प्रतिशत एवं बुधवनपुर में 56.16 शिवराजपुर में 54.89 प्रतिशत, मानपुर में 54.14 प्रतिशत, लोहरा में 48.24 प्रतिशत औसत कृषक जनसंख्या से अधिक है। जबकि सबसे कम न्यायपंचायत लोहगरा में 36.91 प्रतिशत एवं नारी–बारी में 41.08 प्रतिशत, गोईसरा में 43.28 प्रतिशत, नीमी में 44.38 प्रतिशत, चीलगुहनिया सिरमा में 45.85 प्रतिशत है। इस प्रकार कृषक जनसंख्या में गिरावट आयी है।

कृषक मजदूर

कृषि एक असंगठित व्यवसाय है। कृषि प्रधान देख में, कृषि में संलग्न श्रम तथा कृषक मजदूर राष्ट्र के आर्थिक तंत्र की रीढ़ है। स्वतंत्रता के पश्चात से ग्रामों के विकास हेतु सरकार द्वारा प्रयास धीमी गति से हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण श्रम पूर्णतः अविकसित हैं। ग्रामीण श्रम में कृषक मजदूर का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है इनके पास अपनी कोई कृषि योग्य भूमि नहीं होती है। परन्तु कृषि कार्य में अपना श्रम किराये पर देते हैं। विशेषतः कृषक मजदूरों की स्वयं की समस्याएं हैं क्योंकि वे समाज में एक निम्न वर्ग से सम्बद्ध है। सारणी 2 एवं सारणी 3 की तुलना करने पर जहां 1961 में औसत कृषक मजदूर जनसंख्या 16.92 प्रतिशत था इसमें भी न्यायपंचायत गोईसरा में सबसे अधिक 25.83 प्रतिशत

एवं चीलगुहनिया में 25.47 प्रतिशत, मानपुर में 24.67 प्रतिशत, लोहरा में 23.46 प्रतिशत, बुधवनपुर में 21.91 प्रतिशत जबकि सबसे कम न्यायपंचायत नारी–बारी में 6.95 प्रतिशत एवं पदवा प्रतापपुर में 8.92 प्रतिशत, शिवराजपुर में 11.96 प्रतिशत, नीमी में 12.81 प्रतिशत, तातरगंज में 13.86 प्रतिशत, लोहगरा में 16.22 प्रतिशत था जबकि 2011 में औसत कृषक मजदूर जनसंख्या 33.42 प्रतिशत हैं। इसमें भी न्यायपंचायत नारी बारी में सबसे अधिक 45.07 गोईसरा में 42.08 प्रतिशत, चीलगुहनिया में 39.63 प्रतिशत, चकघुरपुर में 37.43 प्रतिशत, पदवा प्रतापपुर में 35.97 प्रतिशत, लोहरी में 35.59 प्रतिशत जबकि सबसे कम न्यायपंचायत बुधवनपुर में 26.32 प्रतिशत एवं तातरागंज में 29.64 प्रतिशत, मानपुर में 30.30 प्रतिशत शिवराजपुर में 31.15 प्रतिशत, नीमी में 31.31 प्रतिशत में वृद्धि हुई है कृषि मजदूरों की संख्या में दोनो दशकों मे विद्यमान असमान प्रवृत्ति, कृषि कार्य में आधुनिक प्राविधिकी का अधिकाधिक उपयोग भूमि विहीन ग्रामीण जनसंख्या का नगरीकरण प्रवजन एवं रोजगार के अवसरों में अभिवृद्धि से सम्बन्धित हैं।

पारिवारिक उद्योग

परिवारिक उद्योग के अर्न्तत घरेलू उद्योग, वाणिज्य मरम्मत का कार्य करने वाली जनसंख्या, लघु एवं कुटीर उद्योग में लगी जनसंख्या आती हैं। सारणी 2 एवं सारणी 3 की तुलना करने पर जहां 1961 में औसत परिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या का 6.35 प्रतिशत था इसमें भी न्यायपंचायत लोहगरा में सबसे अधिक 21.11 प्रतिशत एवं न्यायपंचायत लोहरा में 6.76 प्रतिशत थी जो औसत जनसंख्या से अधिक थी जबकि सबसे कम न्यायपंचायत तातरगंज में 0.60 प्रतिशत एवं नारी–बारी में 1.93 प्रतिशत गोईसरा में 3.97 प्रतिशत, चीलगुहनिया में 3.40 प्रतिशत, शिवराजपुर में 4.32 प्रतिशत, मानपुर में 3.49 प्रतिशत, नीमी में 5.47 प्रतिशत था जबकि 2011 में औसत पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या का 5.38 प्रतिशत था इसमें भी न्यायपंचायत लोहगरा में सबसे अधिक 7.98 प्रतिशत थी। एवं गोईसरा में 7.78 प्रतिशत, बुधवनपुर में 7.78 प्रतिशत, लोहरा में 7.16 प्रतिशत जो औसत जनसंख्या से अधिक थी जबकि सबसे कम न्यायपंचायत चकधुरपुर में 2.60 प्रतिशत एवं पदवा प्रतापपुर में 2.75 प्रतिशत, चीलगुहनिया में 3.10 प्रतिशत, मानपुर में 3.63 प्रतिशत, नारी बारी

में 3.87 प्रतिशत, नीमी में 4.61 प्रतिश, तातरगंज में 4.85 प्रतिशत, है। इस प्रकार पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या में कमी दर्ज की गई है। जिसका प्रमुख कारण रोजगार के लिए ग्रामीण जनसंख्या का नगर की तरफ पलायान है।

अन्य कार्य

कृषि एवं विनिर्माण उद्योग में संलग्न व्यक्तियों के अतिरिक्त कार्यशील जनसंख्या को इस श्रेणी में रखा जाता है। जिनका मुख्य कार्य परिवहन व्यापार एवं संचार होता है। सारणी 2 एवं सारणी 3 की तुलना करने पर जहां 1961 में अन्य कार्य के अर्न्तगत औसत जनसंख्या का 1.94 प्रतिशत था इसमें भी न्यायपंचायत लोहगरा में सबसे अधिक 4.83 प्रतिशत थी एवं न्यायपंचायत गोर्डसरा में 2.42 प्रतिशत, चीलगुहनिया में 2.09 प्रतिशत थी जो औसत जनसंख्या में अधिक थी जबकि सबसे कम न्यायपंचायत तातरगंज में 0.55 प्रतिशत एवं चकघुरपुर में 1.32 प्रतिशत, नारी–बारी में 1.45 प्रतिशत नीमी में 0.83 प्रतिशत, बुधवनपुर में 1. 50 प्रतिशत, शिवराजपुर में 1.29 प्रतिशत, मानपुर में 1.51 प्रतिशत, पदवाप्रतापुर में 1.41 प्रतिशत, लोहरा में 1.60 प्रतिशत, था इस प्रकार 1961 में मात्र दो न्यायपंचायत में औसत से अधिक जनसंख्या थी। जबकि 2001 में अन्य कार्य के अर्न्तगत औसत जनसंख्या का 13.54 प्रतिशत था इसमें भी न्यायपंचायत लोहगरा में सबसे अधिक 27.02 प्रतिशत, थी एवं न्यायपंचायत नीमी में 129.88 प्रतिशत थी एवं न्यायपंचायत नीमी में 19.88 प्रतिशत, थी जो औसत जनसंख्या से अधिक थी जबकि सबसे कम न्यायपंचायत तातरगंज में 6.52 प्रतिशत एवं गोईसरा में 6.85 प्रतिशत, लोहरा में 9.01 प्रतिशत, चकघुरपुर में 10.74 प्रतिशत, नारी–बारी में 9.98 प्रतिशत, चीलगुहनिया में 11.42 प्रतिशत, पदवाप्रतापपुर में 12.20 प्रतिशत, बुधवनपुर में 10.18 प्रतिशत, शिवराजपुर में 9.36 प्रतिशत, मानपुर में 11.93 प्रतिशत, है इस प्रकार अन्य कार्य के अर्न्तगत जनसंख्या में वृद्धि दर्ज की गई है।

निष्कर्ष

बारा तहसील (जनपद–इलाहाबाद) में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह पता चलता है कि कार्यशील जनसंख्या (2011) का कुल प्रतिशत 36.51 प्रतिशत, है जो इलाहाबाद जनपद के कुल कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत 34.66 से अधिक है।

1961 से 2011 की कृषक जनसंख्या, एवं पारिवारिक उद्योग की जनसंख्या में कमी दर्ज की गयी है। वही दूसरी तरफ कृषक मजदूर एवं अन्य कार्य में वृद्धि हुई हैं इससे बेरोजगारी बढ़ी है। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान है। अतः सभी मानवीय पहलुओं को ध्यान में रखकर ऐसी नीति को लागू करना पड़ेगा जिससे रोजगार एवं कार्यशील जनसंख्या में वृद्धि हो तथा क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो।

सन्दर्भ

चन्दना, आर.सी (2004) जनसंख्या भूगोल कल्याणी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ0सं0146–147

योजना–जुलाई–2012

कुरूश्रेत्र– जून–2012

अहमद, ई0 (1965) : भूगोल और नियोजन, भारत के भूगोल के सन्दर्भ में ई अहमद, केन्द्रीय पुस्तक डीपोट, इलाहाबाद

देशपाण्डेय सी0डी0, (1941): बाजार, ग्राम और आर्वती फेरिस मुम्बई का, कर्नाटका भारतीय भौगोलिक पत्रिका

बेरी, बी0जे0एल0, (1959), नगरीय व्यवसायिक प्रतिरूप में ग्रामीण विकास,